।। सिमरण को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ सिमरण को अंग लिखंते ||

सवईयो इंद व छंद

सिंघ सो गज || श्वान सुसे जूं ||
बिल्ली कूं देख || मुसंबर धायो ||
बासग वाज सुणी गरूड || डर प्यांळ कूं पेसत बार न लायो ||
गवाळ कूं देख नही सिंघ ठादो || जागत गांव ज्यां चोर न आवे ||
नाव प्रताप कहे सुखदेव जी || बाज सुणे यूं अध भजावे ||१||

सिंह की गर्जना सुनकर हाथी भाग जाता । कुत्ते को देखकर खरगोस भागता । बिल्ली को देखकर चुहाँ भागता । गरुड को देखकर साप डरकर पाताल मे याने धरती मे जाने को देर नही करता । चरवाहे को देखकर भेडीया (लांङ्गा)खडा नही रहता । जागृत गाँव मे आया हुवा चोर भाग जाता या गाँव में चोर आता ही नही ।

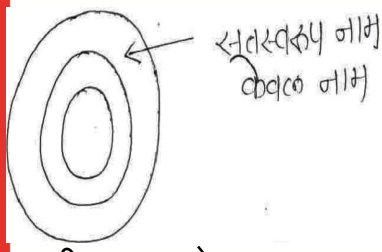

इसीप्रकार केवल नाम की ध्वनी मुख से निकलते ही घट मे के पाप भाग जाते याने नाश होते ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते ।।। १ ।।

कवत्त:– क्हा ओस को नीर || फूस क्हा तप कहायो ||
गेणो क्हा कथीर || रूख ईरंड क्हा बायो ||
धुंवें को क्या कोट || गडे को मोती लीजे ||
आक कांठ को म्हेल || झूट केतोईक रीजे ||
बादळ की क्या छांह || जाळ डोको घर आणे ||
केवळ बिन सुखराम || नाव अेसा सब जाणे ||२||

१)जगतमे सरोवरके मिठे पाणीको पाणी कहते तो ओसके पाणीको भी पाणी ही है कहते ।
२) कोयले के आग को अग्नी कहते तो फुसके आग को भी अग्नी ही कहते ।
३) सोने के गहनो को गहना कहते तो कथील के गहने भी गहने ही है ।
४) सागवान के वृक्ष को वृक्ष कहते तो एरंड के वृक्ष को भी वृक्ष ही कहते ।
५) पत्थर चुनेसे बने हुये किल्लेको किल्ला कहते तो धुंवे का किल्ला भी किल्ला ही दिखता ।
६) जैसे हंस भक्षन करते वह असली मोती को मोती कहते तो आकाश से गिरे हुये गारा याने शित भी मोती सरीखे ही दिखते ।
७) सागवान लकडी से बने हुये मकान को महल कहते तो रुई से बने हुये मकान को महल ही कहेगें ।
८) पेडो के छाया को छाया ही कहते तो बादल के छाया को छाया ही समजते ।
९) मशाल के जाल को जाल कहते तो चेते हुये ज्वारी के धांडे को जाल ही कहते ।

इसीप्रकार केवल नामको नाम कहते तो त्रिगुणीमायासे जन्मे हुये नामो को भी नाम ही कहते ।परंतु सरोवर का जल,कोयले की आग,सोने के गहने,सागवान का वृक्ष,पत्थर चुने का किल्ला, हंस भोजन करते वह असली मोती,सागवान की लकडी से बना हुवा महल,पेडो की छाया, मशाल का जाल ये सभी सच्चे है तो ओस की बुँदे,फुस की आग, कथील के गहने,एरंड का वुक्ष,धुंवे का किल्ला,गार याने शित का मोती,रुई के लकडे से बना हुवा मकान,बादल की छाया,चेते हुये ज्वारी के पेड का जाल ये सभी झूठे है ।

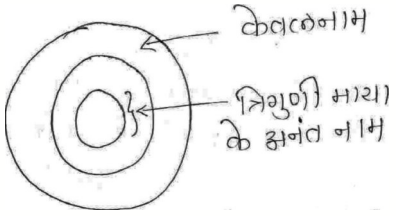

कारण,

१) प्यासे की सरोवर के मिठे जल से ही प्यास बुझती,ओस के नीर से कभी प्यास नही बुझती ।

२) रसोई कोयले के आग से होती,फुस के आग से कभी रसोई नही बनती ।

३) सोने के गहने धन की जरुरत पडने पे काम मे आते,कथील के गहनो से धन की प्राप्ती कभी नही होती ।

४) सागवान के वृक्ष से मकान बनाने के लिये लकडी मिलती तो एरंड वृक्ष से मकान बनाने के लिये कभी भी लकडी नही मिलती ।

५) पत्थर चुने का किल्ला दुश्मनो से बचाव करता तो धुंवे का किल्ला दुश्मनो से कभी बचाव नही कर सकता ।

६) असली मोती ही हंस का पेट भर सकता,आकाश से गिरे हुये मोती के समान दिखनेवाले जल के मोती हंस की भूख कभी नही मिटा सकते ।

७) सागवान से बना हुवा महल रहने के काम आता तो रुई के लकडे से बना हुवा महल रहने के कभी काम नही आ सकता ।

८) तपते सूरज से बचाव करने के लिये वृक्ष की छाया काम देती,बादलो की छाया कभी भी सूरज के तपन से बचाव नही कर सकती ।

९) मशालके जाल से अंधेरेमे मनुष्य एक जगह से दुजे जगह जा सकता तथा घर मे रसोई बनाने के लिये कोयले चेताने को दुजे घर से अपने घर लाकर कोयले चेता सकता परंतु ज्वारी के पेड के जाल से अंधेरे मे मनुष्य एक जगह से दुजे जगह नही जा सकता तथा दुजे घर से अपने घर लाकर कोयले नही चेता सकता कारण जाल बिचमे ही बुझ जाता ।

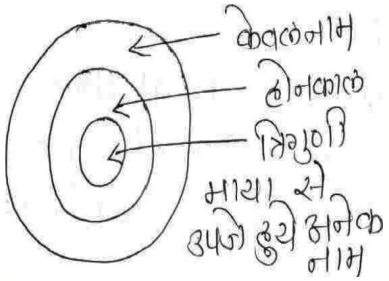

इसीप्रकार केवल नाम और अन्य सभी नाम है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते की केवल नाम से जीव सभी कर्मो से मुक्त होता और जीव कर्म से मुक्त होता इसकारण होनकाल से मुक्त होता परंतु माया के सभी नाम माया से उपजे रहते । माया कर्म है

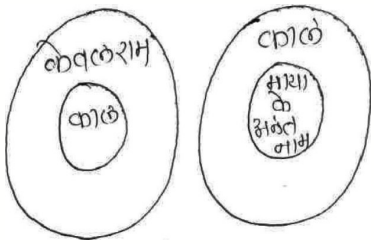

इसलिये ये सभी नाम कर्म के रुप मे जीव को जड्ते । कर्म यही काल है इसकारण जीव माया के कोई भी नाम से काल से मुक्त नही होता ।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी तथा जगत के नर नारीयो को कहते है की,ऐसे माया से उपजे हुये सभी नाम भवसागर से पार होने के लिये झूठे है तो सतस्वरुप से उपजा हुवा सतनाम भवसागर से तिरने के लिये सच्चा है ।।। २ ।।

राम नाम सत्त जाण ।। राम बिन झूट सगाई ।।
गोत कडुंबो बोहोत ।। अंत अेको होय जाई ।।
हट वाडे को लोक ।। आण ग्रेही सब मेळा ।।
आप आप के काज ।। आण सब ही व्हे भेळा ।।
बिणज करे बोपार ।। संच अपने घर जावे ।।
जन सुखिया नर मुढ ।। गिरे को दाम गमावे ।।३।।

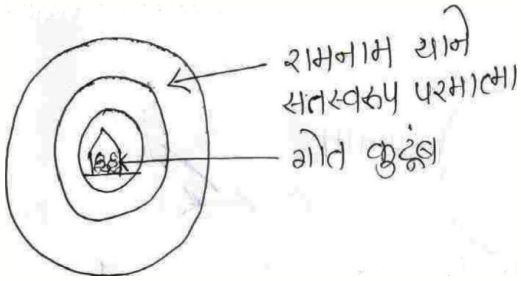

रामनाम यही सत जानिये । रामनाम के सिवा गोत कुटुंब याने माँ,बाप,पत्नी,पुत्र,पुत्री तथा सभी सगे संबंधी ये सभी शरीर का अंत आने पे काल के दु:खो से मुक्त करने के लिये झूठे समजिये । केवल राम नाम यही शरीर अंत होनेपे हंस को काल के हाथ मे नही पडने देता ।

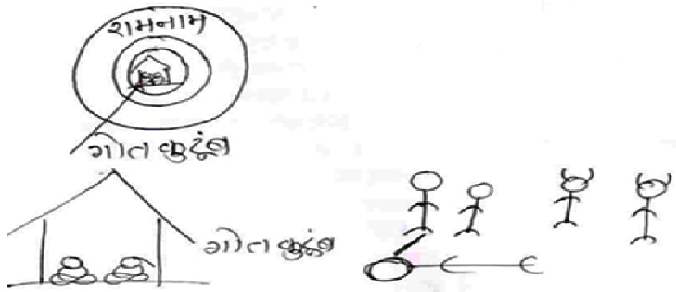

गोतकुटुंब छुड्वानेके लिये साथ नही आते । जीव अकेला ही कालके हाथो अटकावा रहता। नाम साथमे रहता और काल के परे के महासुख के देश मे ले जाता ।

जनम लिया है तो मरना पड्ता ही है मतलब हंस को शरीर छोडना ही पड्ता । हंस को जो शरीर जिस घर मे मिला है वहाँ उस शरीर का गोत कुटुंब याने माँ, बाप,भाई,बहन, पत्नी,पुत्र,पुत्री,दामाद,काका,बाबा, नाना,नानी,दादा, दादी,अनेक सगेसंबंधी ऐसे बहोत है परंतु यह शरीर

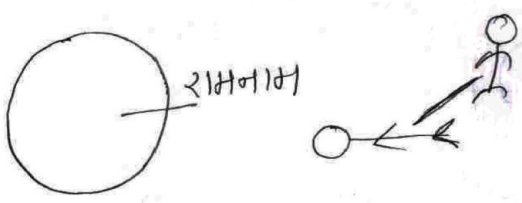

का गोतकुटुंब शरीर का अंत होनेपे एक भी साथ नही चलता । शरीरको छोड्कर हंस को अकेलाही जाना पड्ता और अकेले ने कर्म किये वैसे कालके धक्के खाना पड्ता । इन काल के कष्टो से छुड्वाने के लिये इतना बड्ा गोत कुटुंब रहने के बाद भी एक भी साथ नही आया इसलिये ये सभी गोतकुटुंबो के साथ का हित जो सच्चा दिख रहा था वह झूठा निकला ।

परंतु यही जीवने रामनाम साथ मे चलता और काल के दु:खो से मुक्त करता यह सत जाना होता तो वह अकेला नही रहता,उसके साथ रामनाम रहता जिससे काल के दु:ख नही पड्ते ।

इसलिये सभी नर–नारीयो ने यह समजना चाहिये कि कितना भी बड्ा गोतकुटुंब रहा तो भी इनके साथ कि प्रिती झूठी है और राम के साथ के साथ की प्रिती सच्ची है ।

जैसे लोक बाजार मे अपने अपने खरीदने बेचने के काम के लिये इधर उधर से आये रहते और खरेदी बिक्री करके अपने घर लोटते उसीप्रकार हंस अलग अलग लोक से आपस मे अपने अपने लेने देने के बदले चुकाने के लिये एक परीवार मे आते और बदला चुकाके जिस घर मे आये वहाँ से अकेले अंत मे घर छोड्कर निकल जाते । ये बदले चुकाते वक्त परीवार के मोहमाया के कारण हंस से उच–निच नये कर्म करते और कर्मो के अनुसार हंस के पिछे काल लग जाता और हंस को काल दु:ख भोगवाता । यह पहले ही ज्ञान से समज लिया होता की अंत मे अकेले जाना है ।

यहाँ बाजार मे जैसे अलग अलग गाँव के लोक माल लेने–देने को जमा होते ऐसे परीवार मे कर्मो को लेने–देने का बदला चुकाने के लिये जमा हुये । इस समज से चतुर मनुष्य परीवार से मोहमाया करके नये कर्म नही करता और बदला चुकाने के साथ साथ जो रामजी साथ मे आता उसके साथ प्रिती करके उसका स्मरण करता जिससे काल के दु:ख नही पड्ते ।

परंतु जैसे बाजार मे ब्यापार करके कमाई करने के लिये चतुर मनुष्य आता वैसे बाजार मे मूर्ख मनुष्य भी आता । चतुर मनुष्य बाजार मे जाकर कमाई करता तो मूर्ख मनुष्य बाजार मे बेपार करने के लिये लाया हुवा धन भांड तमाशा देखने मे गमा देता ।

इसीप्रकार मूर्ख मनुष्य परीवारमे आकर अपने मनुष्य शरीरके श्वास रामजीके भजनमे न लगाते गोत कुटुंब के मोहमाया मे अटककर कर्म करता और काल के महादु:ख ८४००००० योनी मे ४३२०००० सालतक भोगता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जता रहे है ।।। ३ ।।

युं ग्रेहे मे सब जीव ।। हाट मंज भेळा होई ।।
नफो समजीयां होय ।। बस्त मो लावो कोई ।।
गाफल गोता खाय ।। गिरे को दाम गमावे ।।

भांड भया देखाय ।। फेर पाछा पिस्तावे ।।
मेळो बिखर जाय ।। फेर कारी नही लागे ।।
ओर ओर सुखराम ।। फेर मोसर नही जागे ।।४।।

जैसे बाजार मे अनेक लोग जमा होते वैसे घर मे सभी जीव जमा हुये । बाजार मे समजकर नफे की कोई वस्तू लेगा तो उसे नफा होगा और जो नफे की वस्तू खरेदी मे गाफिल रहेगा और भांडो के खेल तमासे मे लगकर लाया हुवा धन भांड तमासे में गोते खाकर गमा देगा उसे धोका होगा । संध्या होगी बाजार बिखर जायेगा फिर जिसे धोका हुवा उसने नफे की वस्तू लेने का बिचार भी किया तो ले नही पायेगा कारण पास का धन भी भांडो के तमासो मे गमा दिया और वस्तू का मेला भी बिखर गया । ऐसा मनुष्य अंतीम मे पस्तावा करने लगता परंतु पस्तावा करनेसे नफे की वस्तू पाने का काम नही होता ।

इसीप्रकार घर मे के सभी जीव है । किसीने मोहमाया मे,उदम आपदा मे,घर के गांग्रत मे लाये हुये सांस पुंजी गमा दी और जम के हाथ बिक गया तो किसीने लायी हुई साँस की पुंजी रामनाम के स्मरन में लगाई वह रामजी के देश गया और महासुखी हुवा ।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर–नारीयो को कहते है कि शरीर छुटने के पहले राम स्मरन का निर्णय लो । शरीर से हंस बिछडने पे हंस को काल से मुक्ती पाने के लिये रामजी को साथ पाने का उपयोग भी चाहा तो भी नही होगा उलटा ऐसे हंस को शरीर छुटने के बाद ४३२०००० सालतक ८४००००० योनी मे दु:ख भोगना पडता ।

इसलिये रामजी पाने के लिये मनुष्य शरीर का अवसर ही काम में आता दुजे शरीर से रामजी नही पाये जाते और मनुष्य शरीर बारबार नही मिलता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर–नारीयो को जता रहे है ।।। ४ ।।

जिण मुख मे हर नाम ।। करम का जोर न लागे ।।
भूत प्रेत छळ छिद्र ।। जम दूरा सूं भागे ।।
बिषे ब्याध सब जाय ।। रोग व्यापे नही कोई ।।
चोरासी कूं काट ।। जीत जन निर्मळ होई ।।
देव करे प्रणाम ।। बिस्न ब्रम्हा सिव चावे ।।
जन सुखिया निज नांव ।। ब्रम्ह के माय मिलावे ।।५।।

जिस जीव के मुख मे हरनाम है याने रामनाम है उस जीव के उपर काल भुगतायेगा ऐसे कर्मो का जोर नही लगता । ऐसे रामनामी मनुष्य को भूत,प्रेत,छल,छिद्र तथा जम नही लगते उलटे वे रामनामी संत से दूर भागते । ऐसे रामनामी संत की विषय वासना मर जाती और शरीर की और मन की सभी व्याधीया खतम् हो जाती तथा विषय वासनो के भोग से लगनेवाले रोग विषय वासना छूट जानेसे

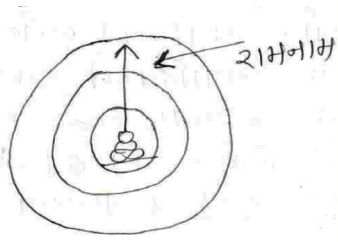

व्यापते नही । ऐसे रामनामी संत काल को जितकर अपनी ८४००००० योनी खतम् कर देते और राम नाम के स्मरन से कर्मो के किटसे निर्मल हो जाते ।

ऐसे निर्मल संतो को ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ती पकड्के सभी स्वर्गादिकके देवता प्रणाम करते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ऐसे निजनाम से निर्मल बने हुये संत को निजनाम आनंदब्रम्ह के महासुख मे पहुँचाता ।।। ५ ।।

ज्यां सिमऱ्या हर नाव ।। जीत निसाण घुराया ।।
मिल्या ब्रम्ह सूं जाय ।। सुन्न मे सेर बसाया ।।
ज्यूं जळ गळीयो लूण ।। समंद सिलता जस माणी ।।
प्राण मिल्यो यूं जाय ।। नाव जुग माय निसाणी ।।
क्हा कहुं इण नाव की ।। आगे अगम लखाय ।।
जन सुखिया रट नाव रे ।। गरक हुवा इण माय ।।६।।

जिसने कुटुंब परीवार से मोहमाया निकालकर रामजी का स्मरन किया उसका होनकाल से जितने का झेंडा ३ लोक १४ भवनमे फहरा और हंस शरीर अंत होने पे होनकाल से निकलकर आनंदब्रम्ह के सुख के शुन्य शहर मे जा बसा ।

जैसे नमक जल मे मिलता,नदी सागर मे समाती वैसे प्राण आनंद ब्रम्ह मे मिलता । नमक जल मे समाने के बाद नमक का नाम लोगो के मुख मे रहता । मिले हुये नमक का अस्तीत्व जगत नही बता सकता वैसेही नदी सागर में मिल जाने के बाद नदी का नाम लोगो के मुख मे रहता परंतु सागर में नदी अलग नही दिखती ।

शरीर से प्राण निकलकर आनंदब्रम्ह मे समा जाने के बाद शरीर का नाम जगत मे सेनानी के रुपमे रहता परंतु प्राण जगत मे नही रहता वह आनंदब्रम्ह में समाया रहता । जैसे नमक जल मे समाने बाद मनुष्यो के मुखमे जल में मिले हुये नमक का नाम रहता परंतु उन्हे जल मे मिले हुये नमक की पहचान नमक करके नही आती तथा जैसे नदी सागर मे

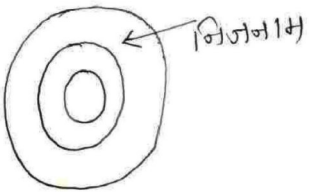

मिल जाने के बाद सागर से मिले हुये नदी का नाम मुख पे रहता परंतु सागर में वह नदी अलग नही पहचाने जाती वैसेही शरीर का नाम जगत मे निशाणी रुप मे रहता और प्राण आनंदब्रम्ह में मिल जाने के कारण वह हंस होनकाल मे कही नही दिखता ।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है इस निजनाम का पराक्रम तथा बडाई क्या बतावू ? यह मन,बुध्दी,चित,समज इन सबके परे का ऐसा अगम समज मे आता ।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसा रामनाम जीभ से रटनेवाले रटते रटते निजनाम में गर्क हो जाते है ।।। ६ ।।

राम नाम निज सार ।। समज सिमरे जन सोई ।।
सुरग लोक पाताळ ।। जुग मे प्रगट होई ।।

जम माने मर जाद ।। चाल पासे नही आवे ।।
दूरा सूं दंडोत ।। साध को द्रसण चावे ।।
मोगा पित्तर भूत ।। अगति सुण सब हरकाया ।।
सुखराम नाम प्रताप ।। जीव कूं सिव मिलाया ।।७।।

सभी नामो में रामनाम यह सार है और जो संत इसे सार समजकर स्मरन करेगा वह होनकाल से जितकर आनंदब्रम्ह मे पहुँचा करके स्वर्गादिक,पाताल तथा मृत्युलोक मे प्रगट रहेगा । ऐसे निजनामी संत की जम आदर से मर्यादा मानता और निजनामी संत मृत्युशय्या पे पडे हुये नरकीय जीव के पास बैठे या खडे है तो वह जम दूर से निजनामी संतके दर्शन लेता,दंडोत करता और निकल जाता । ऐसे निजनामी संत कुल मे प्रगटने से कुल मे के आजदिन तक बने हुये सभी मोगा,पितर,भूत यह सभी अगती योनीया हमारी अगती मे से मुक्ती होगी करके हर्षायमान होती । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ऐसा निजनाम का प्रताप है । यह निजनाम रटनेवाले जीव को सिव याने साहेब मिला देता ।।। ७ ।।

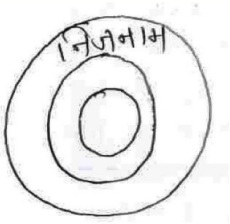

राम सब्द समरथ ।। समंद मे सेन्या तारी ।।
पिरथी क्रोड पचास ।। सेंस ले सिरपर धारी ।।
सब्द रटयो प्रेहेलाद ।। असुर सारा पच मुवा ।।
ग्रभ गुफा सुखदेव ।। सब्द सूं पलटया सुवा ।।
संकर अमर सबद सूं ।। पारबत्ती प्रळे पडी ।।
सुखिया सिम्रथ नाव ओ ।। ऊमाने अमर करी ।।८।।

यह केवल रामशब्द कैसा समर्थ है इसपर संसार के कुछ दाखले आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जगत के नर–नारीयो को दिये है । इस रामशब्द के पराक्रम से रामचंद्र सागर पे पूल बांध सका । रामचंद्र को राक्षसी रावण का नाश करने के लिये वानर सेना समुद्र के पार लंका ले जानी थी । लंबे चौडे तथा अथाह पानीसे भरे हुये समुद्र को पार करना असंभव था । ऐसी असंभव बात रामनाम के पराक्रम से संभव कर ली और सागर पे रामनाम के आधार से पूल बांधकर सेना लंका ले गया ।

शेषनाग को सृष्टी की रचना करते समय पचास करोड धरती सदा के लिये स्थिर रखते हुये सिरपर उठानी थी । इतनी भारी धरती सिरपर उठाना और सदा स्थिर रखना शेषनाग को असंभव दिख रहा था । शेषनाग ने ऐसी असंभव बात रामनाम के सामर्थ्य से संभव कर ली । रामनाम के आधार से धरती इतनी हलकी हो गई की शेषनाग को सिरपर धरती धारन करने पे जरासा भी बोझ आजदिन तक महसूस नही हुवा न हो रहा ।

प्रल्हाद केवल राम रट रहा था । बलवान और क्रोधी पिता हिरण्यकश्यप को प्रल्हाद का केवल राम रटना जरासा भी पसंद नही था । इसलिये प्रल्हाद के पिता ने सभी राक्षसो के

द्वारा प्रल्हाद को मारने का निर्णय लिया । प्रल्हाद को मारने के लिये इकठ्ठा हुये सभी राक्षस प्रल्हाद को मारने मे पच गये अंतीम मे सभी मारे गये परंतु प्रल्हाद को केवल राम रटने से जरासी भी चोट नही आयी ।

वेदव्यास का पुत्र सुखदेव यह सुखदेव बनने के पहले तोता पंछी था । वह तोता केवल राम के बल से सुखदेव नाम का मनुष्य बना । उस सुखदेव ने बारा सालतक माँ के गर्भ को गुफा समजकर केवल राम का रटन किया । ऐसे राम रटने से मिले हुये सुख का आनंद सुखदेव ने माँ के गर्भ में लिया । संहार कर्ता शंकर महाप्रलय खतम् होनेके पहले प्रलय मे जाता । ऐसे अधुरे मे शरीर न छुटे और महाप्रलयतक अमर रहे इसलिये शंकर ने संसार के सभी सुख त्यागे और राम राम रटनेका जोर पकडा । परिणामत: शंकर महाप्रलयतक अमर हुवा । शंकर रामनाम से अमर हुवा परंतु उसकी पत्नी पार्वती बारबार प्रलय मे पडती थी । ऐसे पार्वती १०८ बार प्रलय में पडी । ऐसे प्रलय मे पडनेवाली अपने पत्नी का शंकर ने रामनाम के समर्थाईसे अपने उम्रतक याने महाप्रलय तक अमर किया । ऐसा समर्थ केवल राम है यह आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी ध्यानी तथा जगत के नर–नारीयो को बता रहे है ।।। ८ ।।

चली सैन्या कर कोप ।। रेत रावण कू मारूं ।।
जब बोले रूघनाथ ।। भक्त मेरा मे तारूं ।।
मरू मरू मे राम ।। राम मुख ईनके आवे ।।
मरूं केत मुनेस ।। सदा मेरा जस गावे ।।
हा हराम मे राम ।। जाण अेक जवन तार्‍यो ।।
अर्ध नाव सुण अवाज ।। ग्राहा गजराज उबार्‍यों ।।
सिंवर्‍यो जाण अजाण ही ।। अजा मेळ उधारीयो ।।
गुण अखर सुखराम के ।। र रो म मो के तारीयो ।।९।।

लंकामे राम की सेना रावण के प्रजापर क्रोध करके जिंदे प्रजा को मारने के लिये तुट पडी । उसमे रावण की प्रजा मरने लगी तो मरनेवाली प्रजा मरने सरीखा मार बैठने से मरा,मरा ऐसा मुखसे बोलने लगी । ऐसा मरा मरा प्रजा के मुख से निकलने लगा तब रघुनाथ बोला ये मरनेवाली रावण की प्रजा मुख से मरा मरा बोल रही है याने उलटा राम मुखसे रट रहे है । ऐसा ही उलटा राम रटके महाकुलक्षणी डाकू रत्नाकर डाकू से मुनी बना और रामनाम के सामर्थ्य से मेरे जनम के १०००० साल पहले मै वशिष्ठमुनी को गुरु करके रामभक्त बनूँगा और होनकाल को काटकर मोक्ष में जाने का जस पाउँगा यह भविष्य वर्णन किया । वही मरा शब्द ये प्रजा मुख से उच्चार रही है । इसी मरा शब्द से याने रामशब्द उलटा जपके वाल्मिक मोक्षमे गया । जैसे वाल्मिक को नारदसे मरा शब्द मिला और उससे वाल्मिक का काल छुटा ।

इसीप्रकार ये मरनेवाली प्रजा मरते समय मरा शब्द उच्चार रही । जैसे नारद ने रत्नाकर डाकू को भक्त बनाकर काल से छुड्वाया ऐसा मै भी अंतीम मे मरा मरा बोलनेवाले सभी प्रजा को मेरा भक्त बनाकर काल से छुड्वाउँगा ।

यवन याने मुसलमान काल से उध्दार करने के लिये रामशब्द मुखसे बोलते नही । ऐसेही प्रसंग से एक यवन शौच के लिये घने जंगल मे बैठा । उसी स्थिती में एक क्रोधी जंगली सुअर ने उस मुसलमान को जान से मार दिया । मुसलमान लोग सुअर को हराम कहते । मरते समय पे मुस्लिम के मुख से सुअर के जगह सुअर के लिये हराम शब्द निकला । उस हराम मे रामशब्द था इसकारण उस मुस्लिम का उध्दार हो गया ।

ऐसेही एक हाथी भरे जल के सागर में रम रहा था । उसी सागर में मगरमच्छ भी था । मगरमच्छ को जल मे हाथी से जादा पकड रहती । उस बलशाली हाथी को मगरमच्छ खिचकर जलमे हाथी डूबे ऐसे जलमे ले जाने लगा । जैसे ही हाथी डूबने लगा उसके मुखमे पानी जानेसे और पेटकी हवा बाहर निकलनेसे र र र र इस शब्दकी ध्वनी हुई । मगरमच्छ से छुटकारा पाने के लिये हाथी ने मगरमच्छ को पैरोतले दबाया । इधर हाथी जल मे डूब जाने के कारण मरा और मगरमच्छ हाथी के पैर के तले कुचलने से मरा । हाथी ने मुख से र र र र ध्वनी की और मगरमच्छ ने हाथी के मुख से हुई ररंकार की ध्वनी सुनी । सिर्फ केवल राम मे का इसप्रकार आधा शब्द र र र र मुख से निकालने से हाथी का उध्दार हुवा तो र र र र शब्द मगरमच्छ ने सिर्फ कान से सुनने से मगरमच्छ का उध्दार हुवा ।

इसीप्रकार अजामेल का भी उध्दार हुवा । अजामेल महाकुकर्मी था । उसके अंतसमय पे उसे लेनेके लिये जात से यमराज आया । ऐसे अक्राल-विक्राल जमराज को देखकर अजामेल ने मदतके लिए अपने पुत्र रामनारायण को राम्या राम्या कहकर हाक लगाई और हाक लगाते ही अजामेल का अंतीम साँस पुरा हुवा और अजामेल का प्राण छुट गया । मुख से अंतीम मे राम्या शब्द उच्चारन होने के कारण जमराज ने उसे छोड दिया । इसप्रकार काल से अजामेल मुक्त हुवा ।

इसप्रकार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी जगतके नर-नारीयो को कहते है कि जिसने जिसने केवल रामको जानते अजानते राम करके गाया या जानते अजानते रत्नाकर डाकूके सरीखा उलटा गाया,मुस्लिम सरीखा हराम शब्द मे राम गाया,गजराज के सरीखा राम मे का आधा शब्द र र र र गाया,मगरमच्छ के सरीखा राम मे का आधा शब्द र र र र सिर्फ सुना, अजामेल के सरीखा पुत्र को राम्या नाम से गाया वे सभी तीर गये । तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी जगत के ज्ञानी,ध्यानी,नर-नारीयो को समजाते है कि इस रामनाम का ऐसा गुण ही है कि आधा र या र के साथ म ऐसा पुरा राम उच्चारा तो भी उच्चारनेवाले का उध्दार हुवा ।।।९।।

सोर सिल्ला सिंघ सब्द ।। करम कुंजर उड भागे ।।
गरूड पांख सुन पनंग ।। प्राण सुणतां तन त्यागे ।।
नाग निवण मुख नाव ।। सुधा विष को गुण जारे ।।
पाप रूप पाषाण ।। नाव नौका ज्यूं तारे ।।
बडी रसायण नाव निध ।। जडी जुगत सूं जोडले ।।
सुखराम दास सोगी सबद ।। करम कनक सेजां गळे ।।१०।।

बारुद से बडे बडे पहाडी पत्थर चुरा चुरा हो जाते है तथा सिंघ को देखकर हाथी के कलप के कलप भाग जाते है । इसीप्रकार रामनाम उच्चारने से अनंत जन्मो के जटील से जटील कर्म नाश हो जाते है ।

जैसे गरुड पक्षीको देखते ही भारी जहरीले नाग की प्राण त्यागने तक स्थिती बन जाती है। ऐसेही रामनाम लेनेवाले के कर्म मरे सरीखे ढिले हो जाते है और अन्तोगत: सभी कर्म खतम् हों जाते है ।

जैसे जंगल मे एक नागनिवण नाम की जडी होती है । उससे नाग के काटने से शरीर मे फैला हुआ जहर नष्ट हो जाता है अुस नागनिवण जडी मे यह भी पराक्रम है की वह जडी नाग को दिखाई तो नाग गरीब होकर चला जाता है ।

इसीप्रकार रामनाम है। रामनाम लेनेवालेके कर्म नष्ट हो जाते है और नये कर्म लगते नही। जैसे किसी के शरीर मे जहरीली वस्तू खाने से जहर पसर(फैल)जाता है और उसे ऐसे मृतक हालत मे अमृत पिला दिया तो उसके तन के रोम रोम मे पसरे हुये जहर का गुण खतम् हो जाता और मनुष्य बच जाता ।

इसीप्रकार रामनाम लेनेवाले के तन मे का कर्मरुपी काल नष्ट हो जाता और वह मनुष्य काल के दु:ख से बच जाता ।

जैसे जड से पाषाण नौका मे रखने पे नौका उसे सागर के एक किनारे से दुजे किनारे ले जाती है और पाषाण जल से भारी जड होने पे भी डूबने नही देती ।

इसीप्रकार जिसके मुख मे रामनाम है,वह कर्मो का कैसा भी जड प्राण रहा तो भी रामनाम उसे काल के मुख मे नही जाने देता और भवसागर से पार करा देता ।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे कि कैसा भी सोना हो उसमे सुहागी डालते ही वह सोना गल जाता । इसीप्रकार कैवल्यराम शब्द है । वह जीव के कैसे भी जड भारी कर्म हो वह सभी कर्म गला देता ।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि रामनाम यह बडी रसायन है जो इस शब्द को युक्ती से जोड लेगा याने धारण कर लेगा उसका ८४००००० योनी का आवागमन का फेरा खतम् हो जाता ।।।१०।।

चंदण बनिजड जाण ।। परस चंदण बन हुवा ।।

इम्रत पियो अजाण || करे सर्जीवत मुवा ||
लोहा पारस प्रसंता || जड कंचन होय जावे ||
काम धेन कल ब्रछ || मांग मंछया फळ पावे ||
राम नाम चिंत्रा मणी || मन चिंत्या कारज करे ||
सुखराम प्राक्रम बस्त को || ज्यां नाव भज भौजळ तिरे ||११||

जैसे बन मे चंदन का वृक्ष स्वभाव से एक जगह ही रहता ऐसा जड है । वह कही हिलता, फिरता नही परंतु उसके पराक्रम से उसके पास रहनेवाले सभी वृक्ष चंदनके समान सुगंधित हो जाते है । वह संपर्क मे आये हुये पेडो की चंदन के समान शोभा होती ।

इसीप्रकार रामनाम है । जो मनुष्य रामनामी साधू के संपर्क मे आयेगा वह मनुष्य रामनामी साधू के समान बन जायेगा ।

ऐसे साधू की धरतीलोक,स्वर्गलोक तथा पाताललोक मे शोभा होगी । मरने के अंतीम स्थिती मे आया हुवा मनुष्य अजानते ही अमृत पिया तो भी अमृत उस जीव को मरने से रोक देता और जिवीत कर देता ।

इसीप्रकार रामनाम अजानते ही लिया तो भी वह जीव काल से मुक्त होता और महासुख मे जाता ।

लोहे को पारस का स्पर्श होते ही जड लोहा सोना हो जाता । इसीप्रकार कैवल्य राम जपने से जीव काल के चपेट से निकलकर सतस्वरुप का सिव बन जाता ।

कामधेनू तथा कल्पवृक्ष मन के चाहनानुसार मांगने पे माया के फल देता । ऐसाही रामशब्द जीव को निजमन के चाहनानुसार काल से मुक्त करा कर अमरलोक मे पहुँचाने का फल देता और संसार के सुख बढाता और संसार के दु:ख घटाता ।

चिंतामणी जैसे जीव मन मे चिंतन करता वैसे फल देता । इसीप्रकार रामनाम अमरदेश में पहुँचाने का फल देता और संसार के आधी,व्याधी,उपाधी से मुक्त करता ।

जैसे चंदन,अमृत,पारस,कामधेनू,कल्पवृक्ष,चिंतामणी आदि मे अपना अपना फल देने का पराक्रम है वैसेही रामनाम मे भवसागर से तारने का पराक्रम है ।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जो जो नर–नारी रामनाम भजेंगे वे सभी भवसागर से तिरेंगे ।।। ११ ।।

कुंडल्यो ||

प्रिक्षत सिंवऱ्यो सात दिन || षट दलिप अेक जाम ||
ना मे तो भारी कहयो || हलको कह्योस राम ||
हलको कह्योस राम || पात ज्यूं पाहण ताऱ्या ||
पात भया गिर मेर || दास जो मना बिचाऱ्या ||
सुखराम नाम चिंत्रामणी || अे मन चिंत्या काम ||

परिक्षीत सिंवऱ्यो सात दिन ।। षट दलिप अेक जाम ।।१२।।

जैसा चिंतामणी जो मन मे चिंतन करता वैसा फल देता ।

परीक्षित राजा की नाग के दंश से मौत होनेवाली थी । जिसकारण परीक्षित राजा मृत्यु के पश्चात अगती मे जा रहा था । उसे निजमन से अगती नही चाहिये थी,मुक्ती चाहिये थी। उसके पास शरीर छुटने को सिर्फ सात दिन थे । इतना कम समय होते हुये भी रामनाम रटने से परीक्षित राजा अगतीमे न जाते मोक्ष मे जाता । ऐसा यह राम शब्द चिंतामणी के समान है । रामशब्द जैसा जीव चिंतन करता वैसा काम करता ।

ऐसाही षटवांग राजा के पास शरीर छोडने को सिर्फ दो मुहुर्त याने डेढ से दो घंटे हाथ मे बाकी थे । षटवांग राजा को काल के मुख से मुक्त होना था । समय कम था परंतु षटवांग राजा निजमन से मोक्ष चाहता था । षटवांग राजा समय की सावधानी बरतके गुरु के पास जाकर रामनाम का भेद लेता और रामनाम रटकर अपना उध्दार कर लेता । ऐसा यह रामनाम चिंतामणी के समान जीव जो चिंतन करेगा वैसा फल देता । रामनाम चिंतामणी कैसे उसके जगत मे घडे हुये दो दाखले ।

१) नामदेव को पेड का पत्ता गिरवर के समान भारी करना था और

२) रामचंद्र को पत्थर पेड के पत्ते समान हलका करना था ।

नामदेव को दान लेने के लिये एक दाताने अती आग्रह किया । नामदेव रामनामी था । उसे सिर्फ दाता परमात्मा ही दिखता था ।

जो दाता दान देना चाहता था वह उसे दाता दिखता ही नही था परंतु दाता दानी नही है,दानी सिर्फ राम है यह समज दाता मे लाने के लिये नामदेव ने दाता से दान लेने का निमंत्रण स्विकारा । निमंत्रण के अनुसार नामदेव दाता के पास दान लेने गया और एक पेड के पत्ते इतना दान मांगा । दाता को नामदेव ने मांगे हुये दान को देखकर दु:ख हुवा और मन मे समज बनाई की इसको क्या देयेगे ? अंतीम मे दाता ने नामदेव का रामनाम लिखा हुवा पत्ता तराजू मे एक पलडेपे चढाया और दुजे पलडे मे महंगी से महंगी वस्तू तिजोरी से मंगवाई और रखी । जैसे ही वह वस्तू रखी नामदेव से लिया हुवा पत्ता उस वस्तू से भारी हो गया । इसप्रकार तराजूमे दाता तिजोरी तथा घरसे रत्न,जवाहर,हिरे,पन्ने,लाल,मोती,सोना,चांदी निकाल-निकाल कर रखने लगा वैसे वैसे पेड का पत्ता भारी होने लगा । आखरी दाता के तिजोरी मे और घर मे तराजू मे डालने को कुछ बाकी नही रहा तब दाता को ज्ञान से समज आयी की दाता सिर्फ रामजी है । रामजीके सिवा जगत मे कोई दाता नही । इसप्रकार रामने नामदेव के चाहनानुसार पेड का पत्ता पहाड के समान भारी किया ।

रामचंद्र को लंका मे वानर सेना ले जाने के लिये पुल बनाना था । इसके लिये भारी भारी पत्थर पत्तो के समान हलके होने चाहिये यह जरुरी थी । रामचंद्र ने पत्थरो पे राम लिखा

और वे सभी पत्थर समुद्र मे डालने लगा । पत्थर समुद्र मे पडते ही पत्ते के समान हलके हो गये और जल पे तैरने लगे जिससे पुल बांधे गया ।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे कि जैसे चिंतामणी मन चिंतन के नुसार फल देता वैसाही रामनाम रामनाम रटनेवाले दास की जो निजमन से चाहना होगी वैसा फल देता ।१२।

कवत:– साचो हे हर नाव ।। ओर सब ही जुग झूठे ।।
ज्यूं जळकी पिणी हार ।। होय ऊपजे सब फुटे ।।
ने छे रहे न कोय ।। अंत सब ही चल जावे ।।
प्रदेसी की प्रीत ।। ताहे मे क्या सुख पावे ।।
भांड भया इण संग ।। नाव केता धर लाया ।।
केवळ बिन सुखराम ।। नांव अेसे दिखलाया ।।१३।।

हर नाम यह सच्चा है । अन्य सभी नाम हंस को काल के मुख से निकालने के लिये असमर्थ है । इसलिये झूठे है । ऐसेही गोत कुटुंब है । ये गोत कुटुंब तथा अन्य मायावी नाम निश्चल नही है । शरीर का अंत आने पे काल के मुख से छुड्वाने के काम नही आते । यह गोत कुटुंब और मायावी नाम जल से उपजे हुये बुलबुले के समान है । जैसे नाली का पानी उपर से गिरता तब निचे के पानी मे बुलबुला उठता और उपजा हुवा बुलबुला देखते देखते फूट जाता, बुलबुला निश्चल नही रहता ।

इसीप्रकार अन्य अनेक नाम और गोत कुटुंब मायावी प्रकृतीसे उपजते और नाश हो जाते। हंस अमर है,निश्चल है । हंस का शरीर मायावी है मतलब मरनेवाला है । निश्चल नही है। ये अन्य नाम और गोतकुटुंब हंस का शरीर हंस को मृत्यु होते ही जैसा छोड देता वैसाही ये अन्य नाम और गोतकुटुंब हंस का शरीर छुटते ही हंस को छोड देते । कारण ये नाम और गोतकुटुंब शरीर से जुडे रहते हंस से जुडे नही रहते । इसलिये अन्य नाम और गोतकुटुंब हंस के साथ नही चलते ।

रामनाम यह सच्चा है,निश्चल है । वह शरीर से नही जुड्ता,वह हंस से जुड्ता । इसकारण हंस का शरीर छुटनेपे भी वह हंसके साथ अंततक रहता जिससे काल हंस के निकट भी नही आता ।

जैसे परदेशीके संपर्क मे आने से उससे प्रिती हो जाती है और उससे प्रिती मे सुख मिलता परंतु वह सुख सदा के लिये नही रहता । जैसे उस परदेशी का हमसे बिछड्ना हो जाता वैसेही परदेशी से जो सुख मिल रहा था वह समाप्त हो जाता । इसीप्रकार कुटुंब परीवार के साथ का सुख है । जैसे शरीर छुट जाता हम कुटुंब परीवार से बिछड जाते और बिछड्ने के पहले जो सुख मिल रहे थे वे नष्ट हो जाते ।

जगतमे अनेक मायावी नाम है । शंकर का नाम,विष्णू का नाम,देवी का नाम आदि ।

मनुष्य ने शंकर का नाम धारण किया तो वह मनुष्य शंकर का भक्त दिखता । शंकर को छोड्कर विष्णू का नाम धारण किया तो वही मनुष्य वैष्णव भक्त बनता । विष्णू की भक्ती छोडी और शक्ती की भक्ती धारण किया तो वही भक्त शक्ती का भक्त जगत मे समजे जाता ।

जैसे जगत मे भांड बनते मतलब अलग अलग पहराव पहनके बहुरुपीया बनते । राजा का पहराव पहना की वह मनुष्य राजा के रुप का दिखता । विष्णू का पहराव पहना की वह मनुष्य विष्णू के समान दिखता । हनुमान के पहराव पहनने से वही मनुष्य हनुमान के समान दिखाई देता । ये भांडो का रुप शरीर के पहराव से बना । उस मनुष्य का असली रुप नही था ।

जैसे पहराव उतरा असली रुप मनुष्य का जो था वह सामने आता मतलब पहराव शरीर के उपर का था । शरीर का खुद का नही था । दाखले मात्र जैसे असली राजा और भांड का सोंग लिया हुवा राजा । असली राजाने कितने भी कपडे उतारे तो भी वह राजा का राजा ही रहता परंतु भांड राजा के कपडे उतारते ही भांड राजा नही रहता वह जैसे के वैसे परिस्थिती का लाचार मनुष्य बन जाता ।

इसीप्रकार सच्चा केवलराम है और झूठे अन्य मायावी नाम है । अन्य मायावी नाम हंस का शरीर छुटते ही हंस का भवसागर से तारने का साथ अधुरे मे छोड देता परंतु केवल राम भवसागर से तारने के बाद भी अंततक महासुख देने के लिये साथ मे रहता । ऐसा केवलराम और अन्य नाम मे फरक है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने सभी जगत के नर–नारीयो को बताया है ।।। १३ ।।

।। इति सिमरण को अंग संपूरण ।।